A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

षडज-मध्यम व षडज-पंचम संवाद का विश्लेषण: आधुनिक गायन शैली जसरंगी के संदर्भ में

Vikas Kumar
Researcher, Faculty of Music and Fine Arts, Delhi University, Delhi

OPEN ACCESS

सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उदेश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में संवाद की दो प्रमुख श्रेणियों षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद का विश्लेषण करना है। षडज-मध्यम व षडज-पंचम संवाद का उपयोग केवल भारत में नहीं अपितु पश्चिम के संगीत में भी किया जाता है, जिसको वह लोग हार्मनी के नाम से पुकारते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में संवाद क्या है, संवाद की विशेषता क्या हैं, षडज-मध्यम व षडज-पंचम संवाद का संगीत की दृष्टि से संवाद के क्या मायने हैं तथा आज के समय में इसकी उपयोगिता हमे कहाँ-कहाँ देखने को मिलती है, इन सब विषयों पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे। इस अध्ययन में ग्रंथों का विश्लेषण, गुणी कलाकारों के साथ साक्षात्कार, आधुनिक गायकी जसरंगी में षडज-मध्यम व षडज-पंचम संवाद की उपयोगिता तथा महत्ता के उदाहरण शामिल हैं।

संकेत शब्द: *संवाद, षडज, मध्यम, पंचम, हिन्दुस्तानी संगीत, हार्मनी*

संवाद का महत्व

संवाद मूल रूप से दो या दो से अधिक पक्षों के बीच होने वाली सार्थक और उदेश्यपूर्ण आदान-प्रदान वार्ता का नाम है। संवाद केवल शब्दों का ही नहीं बल्कि विचारों, अनुभवों और दृष्टिकोणो के बीच भी स्थापित हो सकता है। मंच पर बैठ कर जब एक संगीतकार सुर छेड़ता हैं तब उसके सुर और लय के साथ-साथ वहाँ बैठे रसिक जन के साथ भी एक आत्मय संवाद हो सकता है। संवाद करने की प्रक्रिया में व्यक्ति न केवल अपनी बात रखता है, बल्कि सामने वाले को समझने व सामने वाले की बातों को ग्रहण करने का भी प्रयास करता है। इस प्रकार संवाद सम्प्रेषण(communication) का ऐसा रूप है जो परस्पर सहभागिता तथा बौद्धिक खुलापन प्रदान करता है।

संवाद की प्रमुख विशेषताओं में स्पष्टता, सहजता तथा अर्थवत्ता को प्रमुख समझ सकते है। संवाद को हम तब ही सफल कह सकते हैं जब उसमें बोलना व सुनना तथा समझना, यह तीनों तत्व शामिल हों। संवाद विचारों के टकराव से नहीं बल्कि विचारों के समन्वय से गहरा होता है। इंसान के जीवन में संवाद का महत्व अत्यंत गहरा है।

संवाद ही एक मात्र वह माध्यम है जिसके माध्यम से समाज, संबंध, विचार, ज्ञान एवं संस्कृतियों का जन्म होता है। जहाँ संवाद का आभाव गलतफहमी व संघर्ष को बढ़ाता है वहीं संवाद की उपस्तिथि विश्वास व सहयोग को और गहरा कर देती है। किसी भी रचनात्मक तथा बौद्धिक कार्य में संवाद, व्यक्ति को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की संवाद केवल भाषा का उपकरण नहीं, बल्कि मानवीय विकास तथा सामाजिक संरचना का मूल आधार है।

षडज-मध्यम व षडज पंचम संवाद

हिन्दुस्तानी संगीत में संवाद का महत्व कितना अधिक है यह बात तो सर्वमान्य है। भारतीय संगीत शास्त्र में संवाद अथवा स्वरों के परस्पर संबंध को राग निर्माण का मूल सिद्धांत माना गया है, एक सप्तक में षडज, मध्यम, व पंचम एक साथ किसी भी राग में कभी वर्जित नहीं हो सकते। षडज स्वर को प्राण स्वर तथा मध्यम को कुछ लोग अविनाशी स्वर कह कर भी पुकारते हैं। संगीत में हम संवाद का मतलब आसान भाषा में समझें तो हार्मनी के मध्यम से दो स्वरों के बीच बात-चीत होना संवाद कहा जाता है।

षडज-पंचम संवाद प्राकर्तिक(3:2) अनुपात पर आधारित है, जो विश्व के सभी संगीत शस्त्रों द्वारा सर्वाधिक स्थिर अनुपात माना जाता है। वहीं षडज-मध्यम संवाद(4:3) अनुपात से संबंधित है। यही कारण है की भारतीय संगीत में भी मुख्यत: इस संवाद के रागों का चलन अधिक देखा जाता है। षडज, मध्यम तथा पंचम, तीनों ही स्वर एक सप्तक में 4 श्रुति धारण करते हैं। षडज से मध्यम का 9 श्रुति का श्रुतयान्तर होता है तथा षडज से पंचम का 13 श्रुति का श्रुतयान्तर होता है। आज के समय में अगर देखें तो वैसे तो काफी रागों में यह संवाद पाया जाता हैं, परंतु संगीत मार्तंड पंडित जसराज जी ने सर्वप्रथम यह विचार किया की कैसे 2 रागों को एक साथ मंच पर प्रस्तुत किया जाए और एक नई गायन शैली का जन्म किया जाए, ऐसे में प्राचीन मूर्छना पद्धति की मदद से उन्होंने यह पाया की जिन रागों में षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद संभव होता है, ऐसे रागों में जो हार्मनी या

कहें की संवाद उत्पन्न होता है वह बेहद कर्णप्रिय सुनाई देता है तथा यह शास्त्र की दृष्टि से और प्रायोगिक दृष्टि से भी एक उच्च कोटी की गायन शैली को जन्म देता है जिसको हम आज जसरंगी गायन शैली के नाम से जानते हैं। खास बात यहाँ ध्यान देने की है की जसरंगी गायन किसी भी राग की जोड़ी बना कर नहीं किया जा सकता, जिन रागों में षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद पाया जाता है उन रागों को ही जसरंगी गायन के लिए उपयोगी माना जाता है।

यह जसरंगी एक आधुनिक युगल गायन शैली है, जिसमें महिला और पुरुष एक साथ मंच पर 2 अलग-अलग रागों का एक साथ प्रदर्शन करते हैं, यह संभव हो पाता है केवल षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद के उपयोग की वजह से। जसरंगी से पहले एक मंच पर एकल प्रस्तुति के समय कलाकार द्वारा हार्मनी का प्रदर्शन करना भी संभव नहीं हो पाता था। परंतु जसरंगी गायन में गायक व गायिका मिलकर हार्मनी का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब पुरुष कलाकार राग दुर्गा में D# स्केल से सा लगाता है और महिला कलाकार अपने स्केल A# से सा लगाती है तब इतने स्वर लगाने भर से ही हार्मनी का निर्माण हो जाता है। यह हार्मनी होने के पीछे षडज-मध्यम संवाद है, पुरुष कलाकार के मध्यम को जब महिला कलाकार अपना षडज स्वर मान कर आरोह करती हैं तो राग भूपाली बनता हैं।

जसरंगी उपयोगी षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद के कुछ राग

- राग दुर्गा व राग भूपाली
- राग तोड़ी व राग ललित
- राग जोग व राग वृंदावनी सारंग
- राग धानी व राग मेघ
- राग चंद्रकौंस व राग मधूकौंस
- राग मालकौंस व राग धानी
- राग अभोगी व राग कलावती
- राग शुद्धधैवत ललित व राग पूरिया धनाश्री
- राग नट भैरव व राग मधुवंती
- राग मेघ व राग दुर्गा
- राग मंगल भैरव व राग प्रतीक्षा
- राग अमृत वर्षणी व राग भिन्न षडज

निष्कर्ष

षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद भारतीय संगीत के ढांचे में न केवल नाद, श्रुति के आधार हैं, बल्कि रागदारी संगीत की रचनाओं की स्थिरता को परिभाषित करने वाले स्तम्भ हैं। प्रस्तुत अध्ययन में जसरंगी जैसी आधुनिक युगल गायन शैली के उदाहरण के मध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया, जहाँ दो अलग-अलग राग एक ही समकालीन प्रस्तुति में रहते हुए अपना एक अस्तित्व ग्रहण करते हैं। षडज-मध्यम तथा षडज-पंचम संवाद ही वह तत्व है जिसके माध्यम से दो रागों को एक दूसरे में मिश्रित हुए बिना एक साझा सांगीतिक प्रष्टभूमि को तैयार करते हैं।

संदर्भ

भारतीय संगीत का इतिहास, ठाकुर जयदेव सिंह
https://youtu.be/C4W7ANQbYbE
साक्षात्कार
पंडित संजीव अभ्यंकर
सुश्री अंकित जोशी